परिचय

"सामाजिक अध्ययनों के साराँश" के प्रकाशन का विचार **1993** में रखा गया था। यह मात्र एक संयोग था जब डा.एम.डब्लू.उपलेकर की अध्यक्षता में "फाउंडेशन फॉर रिर्सच इन कमयुनीटि हेल्थ" (एफ.आर.सी.एच.) मुम्बई से एक टीम राष्ट्रीय क्षयरोग संस्थान के पुस्तकालय के सर्वेक्षण के लिये आई । उस समय यह संस्था महाराष्ट्र, जो कि पश्चिम भारत का एक विशाल राज्य है, के एक जिले में क्षयरोग के सामाजिक तथा व्यावहारिक व्यवरोध पर अध्ययन हेतु, साहित्य की तलाश मे थी। सभी पारम्परिक साहित्यक सर्वेक्षण जैसे - मेडलाइन सर्वेक्षण, की - जर्नेल सर्चेज आदि से एक बृहत साहित्य का दर्शन तो हुआ किन्तु वह इसकी वास्तिविक आवश्यकता से परे था। उन्हे यह देखकर अत्यन्त सुखद आर्श्चय हुआ कि एन.टी.आई. का पुस्तकालय क्षयरोग के विषय के उपर सूचना की दृष्टि से एक सोने की खान के समान है। जिसमें क्षयरोग के उपर विभिन्न जर्नल्स के अतिरिक्त, विभिन्न अप्रकाशित साहित्य, मोनोग्राफ, कॉनफरेंस प्रर्कियाऐं तथा मुरव्य संगोष्टियों के लेख संग्रहित है। डा.बी.टी.उुके, जो उस समय संस्थान के निदेशक थे, के साथ टीम की वार्ता से इस सहअध्ययन का उद्‌गम हुआ। क्योंकि क्षयरोग से सम्बन्धित सम्पूर्ण उपलब्ध साहित्य के उपर टिप्पणी करना एक विशाल कार्य था इसलिए दोनों संस्थानों की टीमों के बीच एक वार्ता के बाद यह निर्धारित किया गया कि सन् **1939** से लेकर आज तक क्षयरोग के सिर्फ सामाजिक पहलुओं पर एक डाटाबेस बनाया जाये। दोनो संस्थानो के पुस्तकालयाध्यक्षों ने एक वृस्तत योजना के साथ कार्य किया। एन.टी.आई. की वरिष्ठ पुस्तकालयाध्यक्ष श्रीमति सुधा एस. मुर्ति के प्रयासों के द्वारा इस कार्य को **1995** में समयबद्य पूरा कर लिया गया। इसी बीच एफ.आर.सी.एच., मुम्बई मे कुछ आन्तरिक बदलाव के कारण प्रकाशन का कार्य ठप्प हो गया, एसी स्थिति सामान्यता कई प्रकाशनों के साथ होती है, उसी प्रकार इस परियोजना को भी कुछ समय के लिए शीतकक्ष मे जाना पडा।

जब मैने निदेशक पद का भार सम्भाला तो डा. उपलेकर जो इस परियोजना के माष्तिस्क थे ओर जिनेवा से एन.टी.आई. मे एक मीटिंग के लिए आये थे व डा. शीला रंगन के साथ एक मीटिंग की जिससे परियोजना को पुर्नजीवनदान मिला।

बाद में यह आभास हुआ कि यदि इतने प्रयासों के बाद इसको "ग्रंथसुची की टिप्पणी" की जगह सारांश के रुप में क्यों न प्रकाशित किया जाये इससे सुचना सीमित न रहेगी इसलिए दो बिन्दुओं का बदलाव हुआ है :(**1**) संदर्भ ग्रंथसूची टिप्पणी की जगह सारांश शब्द को रखा गया (**2**) इसका वर्षकाल **2000** तक बढ़ा दिया गया।

पाठकों को शुरु के कुछ सारांश छोटे तथा बाद के सासंश काफी बडे लगेंगें जो कि शीर्षक बदलने के कारण है। मेरा व इस पुस्तक के विकासकर्ताओं का मत है कि यह पुस्तक विभिन्न शोध योजनाओं अथवा अध्ययनों के निर्माण मे महत्वपुर्ण सामाजिक साहित्य पुस्तक होगी।

जनवरी : **2002**
बेंगलूर

डा.(श्रीमती) प्रभा जगोता
निदेशक